पहले ही समझ गए थे। वह शासन के लिए सिर्फ मतदान की गिनती के लिए नहीं हैं, वह रैलियों की भीड़ नहीं हैं, जनता के पास भी आवाज है, संसद दमन करने की शक्ति है, क्रांति की शक्ति है। धूमिल भी इस क्रांति चेतना के पक्षधर हैं-

"तुम जानते हो शब्द शस्त्र बन गए हैं
और अगवा बंदूकक की निशान देही पर
कविता ने ढूढ लिया है अपनी मुक्ति का रास्ता
दुश्मन की छाती के खून भरे छेद से" (कल सुनना मुझे, पृ.58)

जनता भावनात्मक बंधनों को भी समझ चुकी है। गांधी और आजादी के नाम पर हो रही राजनीति से अब जनता का मोहभंग हो रहा है। सत्ता की इस राजनीति से रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति नहीं हो पा रही है, यह त्याज्य है। जो जनता रैलियों, जुलुसों में भीड़ बनती आई है वह भी अपना मूल्य समझ रही है, अब वह रोटी के लिए सोंचेगा। यह चेतना शासन तंत्र से मोहभंग का है। उसे अब शासन के कोई आशा या उम्मीद नहीं है, यह आम जन का असंतोष है-

"उस मुहावरे को समझ गया हूं
जो आजादी और गांधी के नाम पर चल रहा है
जिससे न भूंख मिट रही है, न मौसम बदल रहा है,
लोग बिलबिला रहे हैं, पेड़ों को नंगा करते हुए
पत्ते और छाल खा रहे हैं
मर रहे हैं
दान कर रहे हैं
जलसों-जुलूसों में भीड़ की पूरी ईमानदारी से
हिस्सा ले रहे हैं और
और अकाल को सोहर की तरह गा रहे हैं"।

(धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ.18-19)

इस तरह धूमिल का काव्य समकालीन राजनीतिक परिदृश्य का खुला चित्रण करता है। वह सत्ता के संघर्ष, नीति तथा आम जनता से विमुखता को भी अभिव्यक्त करता है। समकालीन राजनीति में राजनीतिक दलों का आपसी संघर्ष भी आम जन जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। शासन तंत्र के प्रति जनता का अविश्वास बढ़ता गया, राजनीतिक वादों से मोहभंग की स्थिति ने हर स्तर पर प्रभावित किया। धूमिल जनकवि हैं, वह समकालीन यथार्थ को स-स्वर प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।

****

संदर्भ:-

1. धूमिल, कल सुनना मुझे, दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2010
2. धूमिल, संसद से सड़क तक, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1972
3. धूमिल, सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र, दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1983
4. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011
5. नवल, नंद किशोर, समकालीन काव्य यात्रा, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004
6. सिंह, काशीनाथ, अपना मोर्चा, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012
7. सिंह, काशीनाथ, आलोचना भी रचना है, नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन, 1996
8. राजपाल, हुकुमचंद, समकालीन बोध और धूमिल का काव्य, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2015
9. जोशी, मीनाक्षी, धूमकेतु धूमिल और साठोत्तरी कविता, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2021

अकाल में उत्सव- समकालीन भारतीय ग्रामीण समाज का प्रतिरूप

प्रो.प्रिया
सरकारी आर्टस कॉलज ,केरल
(संप्रतिः विसिटिंग प्रोफेस्सर कसान फेडेरल विश्वविद्यालय) कसान,रूस
फोनः 9447279181 मेलःpriyabhaskarannair@gmail.com

सार-भारतीय किसान होरी से कभी आगे नहीं बढा है या बढ पा रहा है।वास्तव में यह बहुत ही भीषण स्थिति है।देश प्रगति की ओर तेजी से अग्रसर हो रही है।हर क्षेत्र में वह अपनी उन्नति को दिखाकर सबको गौरव कर रही है।पर माँ भारती के ये किसान अब भी अपनी दरिद्रता व अधिकारी वर्ग के गलत कारनामों के चंगुल में फंसा हुआ है यही चिंतन मनन का विषय है।यह कब तक यह होता जाएगा।क्योंकि गोदान पढते समय किस प्रकार की मनासिकता थी उसी मनासिकता से ही इस को और फांस जैसे अन्य उपन्यासों को हम पढते हैं। इसका मतलब है कहीं हम गलत रास्ते से जा रहे हैं।इसमें किसी न किसी प्रकार हल ढूंढना जरूरी है।गोदान का समय तो अंग्रेज राज था।पर उससे भी गयी बीती करतूत हमारे तथाकथित अधिकारी वर्ग आज भी कर रहे हैं। इसको इस जनतंत्र देश में हल निकालना बहुत जरूरी नहीं अवश्यंभावी भी है।पंकज सुबीर जी ने रामप्रसाद और उनकी पत्नी एवं तीन बच्चों वाले परिवार का चित्र एक फिल्मी ढंग से खींचा है।जो हरेक के मन को छूता ही नहीं सबके मन में एक प्रश्न चिह्न डालता है कि आखिर कसूर किसका है।सत्ता का या सत्ता को गलत ढंग से आगे ले जानेवाले एक बहुसंख्यक मनुष्यों की गलत मानसिकता का।

बीज शब्द - तोंडी - पैरों में पहननेवाली एक आभूषण।देवधामी -उन सभी धार्मिक स्थलों की यात्रा तथा वहाँ जाकर नये दूल्हा- दुल्हन को धोक (साष्टांग) दिलवाने की प्रथा।

प्रस्तावना- इस उपन्यास में एक भी पंक्ति बढा चढाकर नहीं लिखा गया है ।क्योंकि जिस प्रकार हमारे मन को उस गांव की तरफ से उस किसान के पास से उस परिवार से यह उपन्यास हटाता नहीं है और पूरा होने के बाद भी वह किसान एवं पूरा चित्र हमारे मन मस्तिष्क में जम कर रह जाता है जिस प्रकार होरी और धनिया हमारे मन में है ठीक उसी प्रकार रामप्रसाद एवं परिवार भी है।उस समय के बारे में हम सोच सकते थे कि वह तो अंग्रज राज का ही परिणाम है। पर आज हम क्या दिलासा दे सकता है इस किसान के परिवार को।साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है।इस उपन्यास के बारे में शीर्षस्थ आलोचक मैनेजर पाण्डेयजी ने 2016में जनसत्ता समाचार पत्र में साहित्य इस बरस चर्चा के अंतर्गत बताया था कि '-यह गाँव और किसान जीवन के दुःख-दर्द कहनेवाली रचना है।इस उपन्यास को पढकर कहा जा सकता है कि किसान जीवन में आजकल सुख कम और दुःख ज्यादा है।इस उपन्यास में एक किसान की आत्महत्या भी है।शासन प्रशासन द्वारा उस किसान को पागल घोषित कर अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश की जाती है'।1हमेशा किसान को मान एवं अपने सत्कर्म करते ही दिखाया जाता है।अर्थात् किसान कभी किसी प्रकार के झूठ को स्वीकृत नहीं करते। वे मान को हमेशा केलिए पहला स्थान देते है।फिर भी अधिकारी वर्ग उनकी वेदना को नजरअंदाज करने में माहिर है।उन्हें जाने अनजाने किसी प्रकार की सहायता न देते हुए आगे बढने में ही उन लोगों को तृप्ति मिलता है।उनको यह सोचना चाहिए कि इन किसान के रहते ही वे अपना काम कर सकता है और तनख्वाह भी प्राप्त कर रहे हैं।पर कौन सोचता है।दूसरों के बारे में सोचना उनके चप्पल में जाकर खडे होकर के सोचना एवं दया आदि सकारात्मक भावनाओं से उनसे बर्ताव करना आदि एक सच्चा मनुष्य का गुण होनी चाहिए।पर आजकल हर कहीं मस्का लगाना झूठ को अपना आभूषण मानना एवं अपने से थोडा निचले लोगों को परेशान करना उनकी खिल्ली उठाना आदि आजकल के मानवीय बर्ताव में चार चांद लगाने वाली चीजें बन गई है।सिर्फ दिखावा संस्कृति का पनपना एवं राजनीतिक लोग व अधिकारी वर्ग के गैरजिम्मेदारी मनोभाव आदि सामाजिक जीवन को खासकर तथाकथित निम्न तबके के लोगों का जीना दूभर कर दिया है इसका सीधा साक्ष्य ही यह उपन्यास देता है।

इसमें सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के हर पहलुओं को सच्चाई के साथ साझा करने में लेखक सफल हो गया है।राजनीतिक लोगों की गलत व्यवहार, स्वार्थवश कर्म, दिखावा प्रदर्शन एवं दलगत राजनीति का कच्चा ब्यौरा व आपसी द्वन्द्व आदि जो समाज का वास्तविक चित्र का साफ विवरण ही है। कई पहलुओं में बांटकर इस उपन्यास को हम देख सकते हैं।जैसे एक किसान अपने परिवार को चलाने में कितनी मुश्किलें सह लेता है,उस गांव की राजनीतिक माहौल क्या है,अधिकारी वर्ग किस प्रकार इन दरिद्र लोगों को निस्सहाय बना देता है,स्त्री जीवन के दर्द व समर्पण,प्राकृतिक आपदा किस प्रकार एक किसान की जिन्दगी को चकनाचूर कर देता ह,और अंत में इन सबके होते अधिकारी वर्ग व शासक अपनी अपनी सत्ता को कायम रखने की होड में क्या क्या करतूतें करते है इन सबका पूरा चित्र ही यह उपन्यास हमें प्रदान करता है।

किसान एवं परिवार- उस गांव का नाम ही एक प्रकार से किसान के विरुद्ध सा है।सूखा पानी नाम है उस गाँव का ।रामप्रसाद एवं कमला अपने तीन बच्चों को लेकर वहाँ जी रहे हैं।उन दोनों के बीच की वार्तालापों को लेखक ने उनकी बोली में ही कर दिया है।भले ही पूरा अर्थ समझ में नहीं आते पर भी उन दोनों के बीच की उन भावनाओं को उन अनुभूतियों को समझने में कोई दिक्कत नहीं है।शायद उन दोनों के बीच की उन बोलियों से हो रही बातें ही इस उपन्यास की वास्तविकता को बरकरार रखा है ऐसा मुझे लगा।रात का खाना सिर्फ सूखा रोटी व प्याज व मिर्च के साथ लेनेवाले उस परिवार को दिखाकर यह समझाने की कोशिश की है कि देश भर में इन किसानों के द्वारा उगाये गये कितने अन्न हम कूडे कचरे में डालते हैं हर दिन और जो उगाता है वे आज भी एक समय ठीक रूप से खा नहीं पा रहे है।यही समाज का दोहरापन है जिस पर गंभीर कदम उठाना है।पूरे सामान का भाव तो बढ गया है पर उसकी तुलना में अब भी धान्य का भाव बेढा नहीं है ।मैं मानती हूँ कि यही वजह है लोग इसको बरबाद भी कर रहे है।गाँव के लगभग हर किसान अपनी पुश्तैनी खेत को ही संभालते आ रहे है।जब पुश्तैनी के रूप में मिलता है तब उस खेत के साथ बैंक का,सोसाइटी का,सूदखोरों का,कर्ज भी मिलता है।इसी प्रकार ही रामप्रसाद अपने जीवन को भी आगे बढाता है।-दो एकड जमीन में परिवार का गुजारा कैसा होता था,यह रामप्रसाद को ही पता था।-[2] इस तरीके से हर कहीं उस परिवार की दारिद्र्य का चित्र खींचा गया है जो पाठकों के मन को छूता भी है।

स्त्री जीवन का दर्द भरा दास्तान-रामप्रसाद की पत्नी कमला का विवरण इस प्रकार किया है कि धनिया का ही प्रतिबिंब हो।एक प्रकार से यह कृति गोदान की पुनःरचना कहें तो अत्युक्ति नहीं है।-'किसान के जीवन में बढते दःख उसकी पत्नी के शरीर पर घटते जेवरों से आकलित किए जा सकते हैं।नई बहू जब आती है तो नए घाघरे,लुघडे,पोलके के साथ तोडी,बजट्टी,ठुस्सी,झालर,लच्छे,बेंदा,करधनी में झमकती है।फिर धीरे-धीरे उम्र बढने के साथ खेती-किसानी की सुरसा अपना मुँह फाडती है और महिलाओं के शरीर पर से एक-एक जेवर कम होता जाता है'।-[3]इसमें ग्रामीण स्त्री के भोलापन एवं कर्तव्यपरायण प्रतिष्ठा को बरकरार रखने की मानसिकता आदि को कमला के व्यवहार व कर्म से दिखाकर यह समझाने की कोशिश की है कि आज भी भारतीय स्त्रीयाँ विशेषकर ग्रामीण स्त्रीयाँ इस मानसिकता को ही लेकर जी रही हैं कि लोग क्या कहेंगे।इसलिए अपने पती के भाई की पत्नी की माँ की मृत्यू होती है तो अपनी तोडी को बेचकर ही वह परिवार के मान को बरकरार रखने के लिए पूरे आचार के साथ मृत्यू के बाद के अनुष्ठानों को पूरा करती है।तोडी को बेचते वक्त रामप्रसाद की मानसिक द्वन्द्व को लेखक ने बहुत ही दर्दनाक ढंग से लिखा है।जब उसे ब्याह करके लाया गया था तब से रामप्रसाद पहले उसकी तोडी को ही देखा करता था क्योंकि शादी के बाद तो वहाँ देवधामी प्रथा चल रही थी।अब वह सुनार के पास जाकर उस तोडी को मजबूरन बेच डाला है। ।यह वह सहन नहीं कर पा रहे थे।कमला ने आर्थिक तंगीपन के कारण एक प्रकार से जबर्दस्ती से ही बेच डालने केलिए उकसाया था।क्योंकि बहिन की माँ की मृत्यू के कुछ दिन बाद वहाँ जाकर बहुत सारे कर्म को पूरा करने केलिए बहुत पैसों की जरूरत पडती है।आज भी इस प्रकार के रस्मों से लोग एकदम परेशान है फिर भी परिवार की प्रतिष्ठा के मद्देनजर यह सब करने में लोग मजबूर हो जाते हैं।रामप्रसाद एवं कमला के साथ भी यही हुआ।लेखक का कहना कि -'औरत की एक विशेषता यह होती है कि वह आंसू देखते ही माँ बन जाती है।फिर इस बात से कोई फर्क नहीं पडता कि आँसू किसके निकल रहे हैं,उसके बच्चों को उस अवसाद से बाहर खींचने की कोशिश कर रही थीं।4-इसमें पति पत्नी के बीच का एक आध्यात्मिक रिश्ते को ही उजागर कर दिया है जो हममें सूकून सा भाव जगाता भी है।

सूखा पानी गांव की राजनीति - यह गाँव उस राज्य के मुख्यमंत्री का ही विधान सभा क्षेत्र है इसलिए हर कोई इस जगह को बहुत ही करीने से देखते है।ताकि कुछ अनहोनी न हो जाए जिसका रिपोर्ट मीडियावाले अपनी रेटिंग बढाने केलिए देने में तुले हुए है। अगला चुनाव होनेवाला है।चुनाव के पहले हर कहीं होने वाले तथाकथित कार्यक्रम के बारे में इस के अधिकारी वर्ग चिंतित है और उसको किस प्रकार कराना है आदि पर चर्चाएं परिचर्चाएं होती रहती हैं।राजनीति की मूल्यहीनता के बारे लेखक सजग है।दलबदल राजनीति हो चाहे दलगत राजनीती के अंतर होनेवाली खोखलेपन हो इन सबका साफ चित्र इसमें से मिलता है।पार्टी के लोगों की अंदरूनी समस्याओं से उसके अंदर के लोग परेशान है।पर कुछ कह नहीं सकता है।क्योंकि राजनीति से हटा दिया जाएगा इस डर से वे किसी से कह नहीं सकता।इस बात की चर्चा में मोहन राठी एवं राकेश पाँडे, जो वहाँ के राजनीतिक कार्यकर्ता है,के मुँह से कहलवाया है।जैसे दलबदल राजनीति पर अपनी गुस्सा जाहिर करता हुआ मोहन राठी जब बात की थी तब उन दोनों के बीच हुई बातचीत से भारतीय राजनीती की अंदरूनी परतें भी सामने आता हुआ नजर आता है।-.....वह तो राजनीति में अपना बिसिनस सेफ करने केलिए आया है।.....क्या इस प्रकार से हर किसी को राजनीति में ले आना सही काम है।.....मेरा तो मानना है कि जहाँ तक संभव हो,वहाँ तक कोशिश करना चाहिए कि धन-पशु राजनीति में नहीं आएँ।.....अगर यह लोग राजनीति में आएँगे, तो राजनीति में आम आदमी के लिए कुछ नहीं बचेगा।.....यह तो वोट खरीदनेवाले लोग है।[5] आगे नेताओं के चुनाव के बारे में कहता है कि -जिले के पार्टी अध्यक्ष का चुनाव भले ही हम कार्यकर्ताओं के वोट से होता है लेकिन,हकीकत यह है कि नाम ऊपर से तय होकर आ जाता है,हमें तो बस उस तय नाम को वोट देना होता है।यह होता है पार्टियों का अंदरूनी लोकतंत्र।.....विरोध करेंगे,तो हाशिए पर डाल दिये जाएँगे।.....पार्टियों को कार्यकर्ताओं नहीं चाहिए होते,उन्हें अंधे,बहरे और गूँगे लोगों की फौज चाहिए होती है।6राजनीतिक लोगों की दल बदल प्रक्रिया को भी इसमें करारे ढंग से आलोचना की है।राजनीतिक लोगों की एवं तथाकथित समाजसेवकों के खोखलेपन को पर्दाफाश करने में यह उपन्यास सफल हुआ है।'जिन्होंने पार्टी के बुरे समय में पार्टी के झंडे उठाए,दरियाँ बिछाई,वह आज कहीं नहीं हैं और हमारे बाद दूसरी पार्टियों से आनेवाले लोग मलाई उडा रहे हैं।हम जब ओपोशिजन में थे,तो जिन सत्ताधारियों के खिलाफ आवाजें उठाने पर पुलीस के डंडे खाते थे,आज वह लोग हमारी पार्टी के सत्ता में आते ही,पाली बदल कर यहाँ आ गए।यहाँ भी आकर उनको पद मिल गए'।7हर कहीं आम जनता निराश हताश है।जहाँ अधिकार है वहां जाने के लिए लोग हमेशा चाहते हैं।दलबदल राजनीति बहुत घिनौना ही है। **अस्पताल का कुप्रबंधन-**हर समय अस्पताल बहुत सारे लोगों के लिए भीषण ही था,है और रहेगा।क्योंकि वहाँ मनावीय मूल्य करुणा आदि का कोई मायना नहीं है। रोगियों के दर्द को समझनेवाले पहचाननावाले डाक्टर या अधिकारी बिरले ही मिलते है।अगर ऐसे लोग है तो उनको लोग देवता के रूप में ही देखता है।बहुमत अपने को किस प्रकार लाभ उठा सकते है इसी के पीछे है हमेशा।यह एक अस्पताल का नहीं है लगभग हरेक अस्पताल का अलिखित नियम सा है।क्योंकि मेडिकल भ्रष्टाचार अन्यों से ज्यादा है आजकल।मानवीय मसीहा बननेवाले लोग मनव के राक्षस में बदलने का रूप हमने बहुत सारे संगर्भ में देखते है।यहां भी रामप्रसाद की बहिन की सांस अस्पताल में है और उन गरीबों से किस प्रकार का बर्ताव सरकारी अस्पताल वाले करते है।इसका विवरण है।पढकर किसी भी प्रकार अतिशयोक्ति सा नहीं लगेगा।क्योंकि यह चालू है हर कहीं।चाहे गाँव में हो या नगर इसमें कोई बदलाव नहीं है।उस माँ को अस्पताल में भर्ती कर बहुत दिन हो गया।पर ठीक इलाज अभी तक नहीं मिला था।नगर में,क्योंकि मुख्यमंत्रि के विधानसभा होने के कारण वहां किसी प्रकार का उत्सव मनाने में सारे अधिकारी जुडे हुए है।रामप्रसाद के आने पर देखा कि कोई डाक्टर नहीं आया है अभी तक।नर्स अपनी ही समझ से बोटल चढा रही है। पूछने पर

वहाँ के वार्ड बांय का वाक्य इन सारे भ्रष्टाचार का पोल खोलता है--'यहाँ सरकारी अस्पताल में तो सब ऐसा ही चलेगा कामचलाऊ,तुम लोग उनको डॉक्टर साहब के घर जाकर दिखा लो एक बार।वहाँ से अच्छी तरह से देख लेंगे।....घर में जाकर दिखा दो,उनकी फीस दे दो,अच्छी तरह से देख लेंगे और अगर तुम्हारी गुंजाइश होगी, तो किसी नर्सिंग होम में भी भर्ती कर देगा'।-8इस प्रकार गरीबों के लिए जो गुण इन सरकारी अस्पतालों से मिलना था उन सबको पूरी तरह मिटाकर अपने अपने नर्सिंग होम में इनको ले जाकर उसका भीषण लाभ उठाने की रीति हमारे समाज का क्रूर सत्य है।इसमें वार्ड बॉय से लेकर सब भागीदार भी है।कमीशन लेकर सब लोग जीने के लिए आदि हो गये है।जब ऐसा नहीं किया तो रोगियों की मौत ही निश्चित है।कलक्टर आदि अधिकारियों के आने पर भी अस्पताल वाले कुछ करने केलिए तैयार नहीं है।कुछ भी हो उनकी मौत हो गयी थी।सरकारी आंबुलन्स की स्थिति के बारे में वर्णन है-'हालांकि अस्पताल में शव वाहन भी था लेकिन वह टायरों की जगह ईंटों पर अस्पताल के प्रागण में ही खडा अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा था। साल भर पहले ही स्थानीय सांसद ने एक भव्य कार्यक्रम में किसी सरकारी योजना के तहत आया यह शव वाहन अस्पताल को दिया था'।-[9]

अधिकारी वर्ग का दोहरा व्यवहार-कलक्टर जब अस्पताल में निगरानी के लिए आये थे तब सबको निर्देश दिया था कि सबको ठीक रूप से इलाज दिया जाए।पर कुछ नहीं होता।उसी प्रकार जब रामप्रसाद को किसान क्रेडिट कार्ड के गलत इस्तेमाल कर बिना किसान की जानकारी के उनके खाते से पैसा लेना और रेवन्यू रिकवरी के लिए पेपर भेजना आदि बैंक एवं सब अधिकारी वर्गों के मौन जानकारी से ही होता है।पर इसका बुरा असर गरीब किसान को ही भुगतना पड़ता है।जब उससे गांव के अध्यापक ने कहा कि इन पेपर को लेकर नगर में जाकर बैंक के और रेवन्यू वालों से मुलाकात करने केलिए तो जब उनकी मुलाकात कलक्टर से होता है तो कलक्टर उनकी हालात देखकर चाय एवं खाना दिलाने के लिए कहता है।और जब रामप्रसाद खाना खाता है तो उसे लगता है कि थोडा उनकी पत्नी एवं बच्चों के लिए भी लें तो अच्छा होता ।तो उसने रास्ते में खाने के बहाने कुछ लेता जाता है।जब कलक्टर के अर्दली ने आकर यह बात कलक्टर से बताता है तो उनकी प्रतिक्रिया उनके वास्तविक रूप को दिखाता है।श्रीराम परिहार का कहना है किसान हमेशा ज्यादा लेता है।सब कुछ हडपने की मानसिक स्थिति मे हैं आदि।क्रूर ढंग से यह कहना सचमुच अधिकारी वर्ग की निर्दयता दिखाता है।किसी प्रकार उन्हें नगर उत्सव का आयोजन करना ही है।उसके बीच किसान की कोई परेशानी या कुछ और आ जाए तो मीडिया लोग उसको किसी अन्य प्रकार से उसका रिपोर्ट देगा।इस पर किसी प्रकार रोक रखने केलिए मुखौटा पहनकर अपना काम चलाने की विधा है।कलक्टर श्रीराम परिहार रामप्रसाद को कलक्टरेट में देखते वक्त कार्य पूछता है और उनसे बहुत ही आश्वासन दिलाकर बताता है कि -'जाओ अपने गाँव जाओ,हम बैंक से बात करते हैं इस पूरे मामले में'-10इसके बाद वहाँ के अधिकारियों के बीच की बातचीत कि इस उत्सव खतम होने तक इन्हें कलक्टर से न मिलवाना।उसके बाद हम इनकी भूमि को जब्त कर लेंगे।सब लोगों को पता है कि बैंक वालों ने गलत किया है फिर भी वे किसान के विरुद्ध है।

प्राकृतिक आपदा- प्राकृतिक आपदायें हमेशा किसान के लिए बहुत बडा शत्रु है।कब आयेगा कोई पता नहीं है।जब आयेगा तो किसान का सर्वनाश ही है।इस प्रकार के कठिन परिस्थितियों से गुजर कर भी किसान कभी यह मत सोचता है अगला साल मैं खेती नहीं करेगा।यही उनकी धार्मिकता है।भारी बारिश और वह भी ओले के साथ गिरना उन किसान परिवारों को पूरी तरह त्रस्त कर देता है।फिर जब उसकी मुआवजा के लिए जाते है तो वहाँ के पटवारी रामप्रसाद से रिश्वत के रूप में तीन हजार रूपया मांगता है।क्योंकि रामप्रसाद कलक्टर को मिलने गये थे उस दिन इसी को लेकर बहुत मजाक भी किया गया।इस पर मानसिक विभ्रान्ति का आना स्वाभाविक भी है।रामप्रसाद वहाँ से एक पागल की तरह चला गया और उस रात कुएँ में कूदकर आत्महत्या भी की थी।

उत्सव की तैयारियाँ-दो हिस्सों में इस उपन्यास को बाँटे तो इस उपन्यास का शीर्षक बहुत समीचीन है।क्योंकि अकाल में ही उत्सव का आयेजन होता है ।ये अत्सव किसके लिए है।समाज के तथाकथित उच्चवर्ग के लोगों के लिए ही है।यही इसमें दिखाया गया है।उस रात जब टीवी में इसकी खुदखुशी का रिपोर्ट आता है तो तुरंत उसको रोकने की कोशिश कल्क्टर आदि के द्वारा होता है और किसी न किसी प्रकार उसकी मौत उनके पागल हो जाने से ही हुआ है ऐसा सभी से कहलवाता है।उसके लिए रात में ही सारे अधिकारी वर्ग वहाँ जा पहूँचता है और उसके लिए षडयंत्र रचाता है।उसके भाई को समाझा बुझाकर यह कहलवाता है कि मृत्यू किसी और कारण से हुई है पटवारी के द्वारा रिश्वत माँगने पर नहीं है ।बेडे सबेरे लाश को दफनाकर अन्य मीटिया के लोगों के आने तक उस पूरे मामले को नगण्य कर दिया जाता है।यही अधिकार की शक्ति है।जिसको आम लोगों को समझना भी चाहिए।

मीडिया की अदा-यह कहानी बरसों-बरस से लिखी जा रही है और बरसों-बरस से पढी जा रही है।मगर आज भी वैसी की वैसी ही है।पात्र बदलते हैं मगर घटनाएँ नहीं बदलतीं।ऐसा लगता है, जैसे किसी स्थगित से समय में जाकर यह कथाएँ फँस गई हैं।जहाँ से इनकी मुक्ति नहीं हो पा रही है।इस कथन से इस उपन्यास का सब इतिवृत्त सामने आता है।लेखक की अपनी कथन से ही इसको समेटना भी समीचीन है।आगे आनेवाले समय जिस प्रकार प्रेमचंद,संजीव जैसे लेखकों ने सोचा था कि कुछ तो परिवर्तन होगा। इसी सोच के साथ हम भी आगे बढेंगे।क्योंकि हमें राहगीर बनाने के लिए आशा ही चाहिए। आजकल मीडिया किस प्रकार समाचारों को बिना सच्चाई के साथ लेते है और देते है इसका चित्र ही है रामप्रसाद की मृत्यू के बाद के समाचार।

यह उपन्यास बहुत सारे प्रश्न पाठकों के सामने रखकर ही समाप्त होता है।जैसे लेखक का प्रश्न कि खेतों में दिन रात परिश्रम करने वाले किसान के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य तय है किन्तु, दवाओं का कहीं कोई न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं है।वाली बात हम सबको सोचने पर मजबूर कर देता है।'सरकारी व्यवस्था शेर के शिकार करने के समान होती है, जब शेर अपने शिकार में से पेट भर खा लेता है,तो बाकी का शिकार अपने से छोटे जानवरों, मतलब गीदडों आदि के लिए छोड देते हैं।'[11]एक प्रकार से मन को मसोस कर ही यह उपन्यास से गुजर सकता है।कुछ भी हो इसमें बदलाव जरूर होनी चाहिए।

****

संदर्भ सूची:

1.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश कवर पेज
2.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.10
3.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.11
4.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.23
5.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.84
6.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.85
7.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.86
8.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.57-58
9.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.69-70
10.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.149
11.पंकज सुबीर 2018 अकाल में उत्सव,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश पृ.सं.15